Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 3 | (July – Sep 2025)

जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ० मिनेश भट्ट [1], अखिलेश जोशी [2]
[1] निर्देशक, सहायक आचार्य, एल. एम. टी. टी. कालेज, डबोक, उदयपुर
[2] शोधार्थी, एल. एम. टी. टी. कालेज, डबोक, उदयपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध में जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा राजस्थान के जनजातीय क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9वीं एवं 10वीं के 150 विद्यार्थियों का चयन नमूने के रूप में किया गया। इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिए शोध में शोधार्थी ने संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिए स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया। शोध परिणामों से प्राप्त हुआ कि जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक रूप से अंतर पाया गया। जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भी सार्थक रूप से अंतर पाया गया।

मुख्य शब्द:- जनजाति क्षेत्र, संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति , शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना:-

शिक्षा का सार्वभौमिक उद्देश्य है नैतिकता का विकास। प्राचीन व मध्ययुगीन भारत में धर्म, संस्कृति व शिक्षा परस्पर एक-दूसरे के पर्याय रहे हैं। अतः इस सार्वभौमिक उद्देश्य की प्राप्ति होती रही। प्राचीन भारत में शिक्षा द्वारा इस बात पर बल दिया गया कि धर्म का तात्पर्य कर्तव्य या आचरण से है। अतः धर्म प्रधान शिक्षा से व्यक्तियों में सहज त्यागवृत्ति उत्पन्न होती थी, जो नैतिकता का सबल आधार था। मूल्य शिक्षा किसी विषय-विशेष से संबंधित न होकर विद्यालय की समस्त पाठ्यचर्या और क्रियाकलापों का अभिन्न अंग है। भारत में संस्कृत भाषा का एक लंबा और गौरवशाली इतिहास रहा है। यह न केवल एक प्राचीन भाषा है बल्कि भारतीय संस्कृति, दर्शन, विज्ञान और साहित्य का भी अभिन्न अंग है। पारंपरिक रूप से, संस्कृत का अध्ययन उच्च जातियों और शिक्षित वर्गों तक ही सीमित रहा है। हालांकि, हाल के वर्षों में, भारत सरकार और विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों ने संस्कृत शिक्षा को अधिक समावेशी बनाने और इसे समाज के सभी वर्गों, विशेष रूप से जनजाति क्षेत्रों तक पहुँचाने के प्रयास किए हैं।

जनजाति समुदाय, जो भारत की कुल जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, अपनी अनूठी संस्कृति, भाषा और परंपराओं के लिए जाने जाते हैं। इन समुदायों में शिक्षा का प्रसार और विकास हमेशा से एक चुनौती रही है। हाल के दशकों में शैक्षिक अवसरों में वृद्धि के बावजूद, जनजाति छात्रों को अभी भी कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें भाषा बाधा, सांस्कृतिक भिन्नता और सीमित संसाधन शामिल हैं। इस संदर्भ में, संस्कृत जैसी शास्त्रीय भाषा को पढ़ाना और सीखना एक जटिल विषय बन जाता है।

यह शोध संस्कृत भाषा के प्रति जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति (दृष्टिकोण) और उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर इसके प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास करता है। अभिवृत्ति, जैसा कि मनोविज्ञान में परिभाषित किया गया है, किसी वस्तु, व्यक्ति या विचार के प्रति व्यक्ति की सकारात्मक या नकारात्मक भावना,

विचार और व्यवहार की प्रवृत्ति है। संस्कृत भाषा के प्रति छात्रों की अभिवृत्ति का उनकी सीखने की प्रेरणा, कक्षा सहभागिता और अंततः उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पड़ सकता है।

यह अध्ययन इस परिकल्पना पर आधारित है कि संस्कृत भाषा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाले जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उन विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर होगी जिनकी अभिवृत्ति नकारात्मक या उदासीन है। इसके अतिरिक्त, यह शोध विभिन्न जनसांख्यिकीय और सामाजिक-आर्थिक कारकों का भी मूल्यांकन करेगा जो इस संबंध को प्रभावित कर सकते हैं।

अभिवृत्ति :-

अभिवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक शब्द है, जिसका तात्पर्य किसी व्यक्ति के किसी वस्तु, व्यक्ति, विषय, विचार या परिस्थिति के प्रति दृष्टिकोण या मानसिक झुकाव से होता है। यह मानसिक स्थिति व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करती है। उदाहरणतः यदि किसी छात्र की गणित के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है, तो वह उस विषय को उत्साह से पढ़ेगा और उसमें सफलता की संभावना अधिक होगी।

अभिवृत्ति व्यक्ति की सोच, व्यवहार और निर्णय को दिशा प्रदान करती है। यह स्थायी होते हुए भी अनुभवों के आधार पर परिवर्तनीय होती है। शिक्षा, संवाद और प्रेरणा के माध्यम से अभिवृत्तियों में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। समाज के विकास के लिए आवश्यक है कि लोगों में सहयोग, सहिष्णुता और प्रगतिशीलता की अभिवृत्ति विकसित की जाए। क्रॉस के अनुसार "अभिवृत्ति एक ऐसी मानसिक और तंत्रिकात्मक अवस्था है, जो अनुभव के आधार पर बनती है और किसी विशेष वर्ग की चीजों या परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया को निर्देशित करती है।"

शैक्षिक उपलब्धि :-

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है, और शैक्षिक उपलब्धि उस शिक्षा की गुणवत्ता और परिणाम को परखने का एक महत्वपूर्ण मानदंड है। 'शैक्षिक उपलब्धि' का तात्पर्य छात्र द्वारा किसी निश्चित समयावधि में शिक्षणटअधिगम प्रक्रिया के अंतर्गत प्राप्त ज्ञान, कौशल, समझ, व दृष्टिकोण से है। यह उपलब्धि परीक्षा में प्राप्त अंकों, ग्रेड, व्यवहारिक प्रदर्शन, एवं बौद्धिक विकास जैसे विविध रूपों में परिलक्षित होती है। क्रो और क्रो के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि वह सीमा है, जिसमें छात्र विद्यालय द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करता है।"

दूसरे शब्दों में, शैक्षिक उपलब्धि यह बताती है कि छात्र ने अपने शिक्षण काल में क्या सीखा, कितना समझा और उसे किस प्रकार व्यवहार में लाया। शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन आमतौर पर परीक्षाओं, परियोजनाओं, प्रस्तुतीकरण, व्यवहार विश्लेषण और कक्षा में सहभागिता के आधार पर किया जाता है। वर्तमान में योग्यता आधारित शिक्षा प्रणाली में केवल अंक नहीं बल्कि व्यवहारिक दक्षता और समग्र विकास पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

शैक्षिक उपलब्धि केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, सोच, व्यवहार और जीवन कौशल के समग्र विकास को दर्शाती है। यह विद्यार्थी के वर्तमान और भविष्य का निर्धारण करती है। अतः छात्रों को ऐसी शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए, जो उन्हें केवल सूचना नहीं, बल्कि सृजनात्मक, नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से समृद्ध बनाए।"

पूर्व शोध का अध्ययन:-

शर्मा (2018), संस्कृत भाषा को भारतीय संस्कृति, दर्शन, साहित्य और विज्ञान की आधारशिला माना जाता है। यह न केवल वेद, उपनिषद और पुराणों की भाषा है, बल्कि आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी भी है। शिक्षा के क्षेत्र में संस्कृत का अध्ययन तार्किक क्षमता, भाषाई कौशल और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाता है ।

गुप्ता (2019), अभिवृत्ति किसी विषय या भाषा के प्रति छात्रों की मानसिक प्रवृत्ति को दर्शाती है। शोधकर्ताओं ने पाया है कि सकारात्मक अभिवृत्ति शैक्षिक सफलता को बढ़ावा देती है। संस्कृत के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति के कारण विद्यार्थियों का प्रदर्शन निम्न स्तर का हो सकता है।

मिश्रा (2020), जनजातीय समुदायों में शिक्षा का स्तर अक्सर राष्ट्रीय औसत से कम पाया गया है। इन क्षेत्रों में भाषाई बाधाएँ, सांस्कृतिक अंतर और शैक्षिक संसाधनों की कमी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। संस्कृत जैसी शास्त्रीय भाषा के प्रति इन समुदायों के विद्यार्थियों की रुचि कम होने के कारण उनकी शैक्षिक प्रगति प्रभावित होती है।

शोध के उद्देश्य:-

1. जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना:-

1. जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

न्यादर्श:-

प्रस्तुत शोध के लिये राजस्थान के बांसवाडा जिले की जनजातीय क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 वीं एवं 10 वी के 150 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

चर:-

- स्वतंत्र चर:- जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थी
- आश्रित चर:- संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि

शोध विधि:

इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिए स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया। प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण टी-टेस्ट द्वारा किया गया।

परिसीमन:

यह शोध कार्य राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के जनजातीय क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9वीं एवं 10वीं के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।यह शोध कार्य विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि तक ही सीमित है।

आंकडों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या:-

जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान फलांकों में तुलनात्मक विश्लेषण एवं व्याख्या। शोध अध्ययन का उद्देश्य जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति का के

सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं स्वतंत्र टी-परीक्षण द्वारा किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण का विवरण तालिका 1 मे दर्शाया गया है।

तालिका 1

जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी फलांकों का सारांश

विद्यार्थी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	SD Error Mean	df	t- value	Remark
छात्र	75	28.07	3.39	.45	148	5.25*	Significant
छात्राएं	75	31.18	3.98	.39			

सार्थकता का स्तर .01

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि जनजाति क्षेत्र के छात्रों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 28.07 एवं प्रमाणिक विचलन 3.39 है, एवं छात्राओं की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 31.18 एवं प्रमाणिक विचलन 3.98 है, तथा ज का मान 5.25 है, जो कत्रि148 के सार्थकता के 0.01 स्तर पर तालिका के मान 2.576 से अधिक है। इसलिये यह सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना "जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि जनजाति क्षेत्र के छात्राओं की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, छात्रों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान से सार्थक रूप से अधिक है। अर्थात् जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक रूप से अंतर पाया गया।

जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान फलांकों में तुलनात्मक विश्लेषण एवं व्याख्या।

शोध अध्ययन का उद्देश्य जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं स्वतंत्र टी-परीक्षण द्वारा किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण का विवरण तालिका 2 मे दर्शाया गया है।

तालिका 2

जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी फलांकों का सारांश

विद्यार्थी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	SD Error Mean	df	t- value	Remark
छात्र	75	38.62	4.34	.50	148	3.15*	Significant
छात्राएं	75	42.55	4.98	.57			

सार्थकता का स्तर .01

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि जनजाति क्षेत्र के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 38.62 एवं प्रमाणिक विचलन 4.34 है, एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 42.55 एवं प्रमाणिक विचलन

4.98 है, तथा ज का मान 3.15 है, जो कि 148 के सार्थकता के 0.01 स्तर पर तालिका के मान 2.576 से अधिक है। इसलिये यह सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना "जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि जनजाति क्षेत्र के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान से सार्थक रूप से अधिक है। अर्थात् जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक रूप से अंतर पाया गया।

निष्कर्ष

जनजाति क्षेत्र के छात्राओं की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, छात्रों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान से सार्थक रूप से अधिक है। अर्थात् जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक रूप से अंतर पाया गया। जनजाति क्षेत्र के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान से सार्थक रूप से अधिक है। अर्थात् जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक रूप से अंतर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

परिणामों के आधार पर, संस्कृत पाठ्यक्रम को जनजाति छात्रों की आवश्यकताओं और रुचियों के अनुरूप विकसित किया जा सकता है। इसमें उनकी मातृभाषा और संस्कृति को संस्कृत शिक्षा के साथ एकीकृत करना शामिल हो सकता है। शिक्षकों को ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान किए जाने चाहिए जो उन्हें जनजाति छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को समझने और संस्कृत को आकर्षक और प्रासंगिक तरीके से पढ़ाने में सक्षम बनाएं। बहुभाषी शिक्षण रणनीतियों पर विशेष जोर दिया जा सकता है।

जनजाति समुदायों में संस्कृत भाषा के महत्व और लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। इससे अभिभावकों और छात्रों को संस्कृत सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकेगा। जनजाति क्षेत्रों में संस्कृत सीखने के लिए पर्याप्त संसाधन, जैसे पाठ्यपुस्तकें, सहायक सामग्री और डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराए जाने चाहिए। संस्कृत शिक्षा को सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत किया जाना चाहिए, ताकि यह जनजाति छात्रों की पहचान और परंपराओं का सम्मान करे।

संदर्भ ग्रन्थ

1. भटनागर, सुरेश, शिक्षा मनोविज्ञान, आर लाल बुक डिपो, मेरठ 1992।
2. अग्रवाल, जे. सी., एजुकेशन रिसर्च एन इन्ट्रोडक्शन, आर्य बुक डिपो, न्यू दिल्ली 1996।
3. एम. के. मंगल, शुभ्रा मंगल, व्यवहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियाँ
4. अस्थाना एवं श्रीवास्तव, विपिन एवं विजया, शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीं
5. फिशबेन, एम., - आजेन, आई. (1975). बिलीफ, एटीट्यूड, इंटेंशन एंड बिहेवियररू एन इंट्रोडक्शन टू थ्योरी एंड रिसर्च. विली.
6. कुमार, ए. (2018). बहुभाषी शिक्षा और जनजाति छात्र. नई दिल्ली, अकादमिक प्रकाशन.
7. मिश्रा, आर. (2017). ग्रामीण भारत में संस्कृत शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकारी पहल. शिक्षा और समाजशास्त्र का जर्नल, 7(2), 45-58.
8. रेड्डी, एस. (2020). जनजाति छात्रों में ड्रॉपआउट दरों के सामाजिक-आर्थिक कारक. भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 12(1), 89-102.
9. शर्मा, पी. (2010). संस्कृत शिक्षा का महत्व. दिल्ली, भारतीय विद्या प्रकाशन.

10. सिंह, वी. (2015). भारतीय संस्कृति के संरक्षक के रूप में संस्कृत भाषा. मानविकी और सामाजिक विज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 3(4), 112-125.
11. बर्नार्ड, जे. (2012). छात्र अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धिरू एक मेटा-विश्लेषण. शैक्षिक मनोविज्ञान की समीक्षा, 24(3), 305-325.पाण्डा, अनिल कुमार (2018): अनुसंधान विधियाँ एवं सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी, साहित्य रत्नालय, कानपुर।